शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

देश के विभाजन को मिटना ही होगा

श्री अरविंद

(आकशवाणी त्रिचनापल्ली की प्रार्थना पर 15 अगस्त 1947 को दिया गया संदेश)

वस्तुतः मेरा सदा ही यह विश्वास रहा है और मैंने सदा यह कहा भी है कि भारत केवल अपने भौतिक हितों की सिद्धि के लिए, विस्तार, महानता, शक्ति और समृद्धि पाने के लिए नहीं उठा रहा - यद्यपि इनकी भी उसे उपेक्षा नहीं करनी होगी, और निश्चय ही वह दूसरों की तरह अन्य देशों पर आधिपत्य जमाने के लिए भी नहीं उठा रहा, अपितु वह उठ रहा है सारी मनुष्य जाति के सहायक और नेता के रूप में परमेश्वर और जगत के हित जीने के लिए। वे लक्ष्य और आदर्ष अपने स्वाभाविक क्रम में ये थे: एक क्रांति जो भारत की स्वाधीनता और एकता साधित करे, एशिया का पुनरुत्थान तथा स्वातंत्र्य और उसका उस महान भूमिका को फिर से प्राप्त करना जो उसने मानव सभ्यता की उन्नति में अदा की थी, मानव जाति के लिए एक नये, अधिक महान, उज्ज्वल और श्रेष्ठ जीवन का उदय जो अपनी संपूर्ण चरितार्थता के लिए बाहरी तौर पर राष्ट्रों की पृथक् सत्ता के अंतर्राष्ट्रीयकरण एकीकरण पर आधारित होगा, उनके राष्ट्रीय जीवन को सुरक्षित और सुदृढ़ करेगा पर उन्हें एक दूसरे के पास लाकर एक सर्व-अभिभावी चरम परम एकत्व का रूप दे देगा, भारत के द्वारा अपने आध्यात्मिक ज्ञान का और जीवन को आध्यात्मिक बनाने के साधनों का सारी जाति को दान, अंत में क्रम विकास में नया कदम जो चेतना को उच्चतर स्तर पर उठाकर जीवन की उन अनेक समस्याओं का हल प्रारंभ कर देगा जिन्होंने मनुष्य जाति को तभी से हैरान और परेशान कर रखा है जब से मनुष्यों ने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाज के विषय में सोचना और स्वप्न देखना शुरू किया था।

भारत स्वाधीन हो गया है पर उसने एकता प्राप्त नहीं की, पाई है केवल टूटी-फूटी स्वतंत्रता। एक समय प्रायः ऐसा दीखता था मानो वह शायद फिर से पृथक्-पृथक् राज्यों की उस अव्यवस्थापूर्ण स्थिति में जा गिरेगा जो ब्रिटिश विजय से पहले विद्यमान थी। भाग्यवश अब ऐसी प्रबल संभावना उत्पन्न हो गई है कि इस प्रकार का संकटपूर्ण पुनः पतन टल जाएगा। संविधान सभा की बुद्धिमत्तापूर्ण उग्र नीति ने इस बात को संभव बना दिया है कि दलित वर्गों की समस्या बिना फूट-फटाव के हल हो जाएगी। परंतु हिंदुओं और मुसलमानों का पुराना सांप्रदायिक भेद देष के स्थायी राजनीतिक विभाजन के रूप में सुदृढ़ हो गया दीखता है। यह आषा करनी चाहिए कि कांग्रेस और राष्ट्र इस तय किए गए विभाजन को सदा के लिए निर्णीत नहीं मान लेंगे, न वे इसे एक कामचलाऊ अस्थायी उपाय से अधिक कुछ समझेंगे। क्योंकि यदि यह कायम रहा तो भारत भयानक रूप में दुर्बल और अपंग तक हो सकता, गृह-कलह का होना सदा ही संभव बना रह सकता है, नये आक्रमण और विदेशी राज्य का हो जाना तक

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संभव हो सकता है। देश के विभाजन को मिटना ही होगा - हम आशा करें कि तनाव के ढीले पड़ने से शांति और मेल-मिलाप की आवश्यकता को उत्तरोत्तर अधिक समझते जाने से, साझे और संयुक्त कार्य की और यहां तक कि इस प्रयोजन के लिए ऐक्य की साधना की भी सतत आवश्यकता अनुभव करने से यह विभाजन दूर हो जाएगा। इस प्रकार एकता चाहे किसी भी रूप में आ सकती है - उसके ठीक-ठीक रूप का व्यावहारिक महत्व भले ही हो, कोई आधारभूत महत्व नहीं है। परंतु चाहे किसी भी उपाय से हो, विभाजन को मिटना ही होगा और वह मिटकर रहेगा। क्योंकि ऐसा हुए बिना भारत का भविष्य भीषण रूप से कुण्ठित यहां तक कि विफल भी हो सकता है। परंतु ऐसा बिलकुल नहीं होगा।...स्वयं भारत भी यदि विभक्त रहा तो अपनी सुरक्षा के बारे में निश्चित रूप से आश्वस्त नहीं रहेगा। अतएव एकीकरण का साधित होना सबके हित की बात है। केवल मानवीय अशक्तता एवं मूर्खतापूर्ण स्वार्थपरता ही उसे रोक सकती है।....संसार को भारत का आध्यात्मिक दान प्रारंभ हो ही चुका है। भारत की आध्यात्मिकता यूरोप और अमेरिका में नित्य बढ़ती हुई मात्रा में प्रवेश कर रही है। यह आंदोलन बढ़ेगा, वर्तमान काल की विपदाओं के बीच अधिकाधिक लोगों की आंखें आषा के साथ भारत की ओर मुड़ रही हैं और न केवल उसकी शिक्षाओं का अपितु उसकी आंतरात्मिक और आध्यात्मिक साधना का भी अधिकाधिक आश्रय लिया जा रहा है।...ये हैं वे भाव और भावनाएं जिन्हें मैं भारतीय स्वाधीनता की इस तिथि के साथ संबद्ध करता हूं। क्या यह घटनाक्रम पूरा होगा या कहां तक या कितनी शीघ्र पूरा होगा यह बात इस नये और स्वाधीन भारत पर निर्भर करती है। - श्री अरविंद - अपने विषय में से एकीकरण का साधित होना सबके हित की बात है। केवल मानवीय अशक्तता एवं मूर्खतापूर्ण स्वार्थपरता ही उसे रोक सकती है।....संसार को भारत का आध्यात्मिक दान प्रारंभ हो ही चुका है। भारत की आध्यात्मिकता यूरोप और अमेरिका में नित्य बढ़ती हुई मात्रा में प्रवेश कर रही है। यह आंदोलन बढ़ेगा, वर्तमान काल की विपदाओं के बीच अधिकाधिक लोगों की आंखें आषा के साथ भारत की ओर मुड़ रही हैं और न केवल उसकी शिक्षाओं का अपितु उसकी आंतरात्मिक और आध्यात्मिक साधना का भी अधिकाधिक आश्रय लिया जा रहा है।...ये हैं वे भाव और भावनाएं जिन्हें मैं भारतीय स्वाधीनता की इस तिथि के साथ संबद्ध करता हूं। क्या यह घटनाक्रम पूरा होगा या कहां तक या कितनी शीघ्र पूरा होगा यह बात इस नये और स्वाधीन भारत पर निर्भर करती है। - श्री अरविंद - अपने विषय में से